卐 !! श्री अरहनाथाय नमः !! 卐

श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र

नवागढ़ जी

का

संक्षिप्त परिचय

और

श्री अरहनाथ जिनपूजन

लेखक

नीरज जैन

प्रकाशक

प्रबंधकारिणी कमेटी, नवागढ़ जी

!! श्री महावीराय नमः !!

स्व.श्रीमती पार्वती जैन की

पुण्य स्मृति में सादर भेंट

शांति विधान-

दि. 28 सितम्बर 2010 मंगलवार

परिवार जन-

पुत्र- सिं. भागचन्द्र, शीलचन्द्र, खूबचन्द्र
शिखरचन्द्र जैन एवं समस्त परिवार

मैनवार, जिला- ललितपुर (उ.प्र.)

निवेदन

तीर्थभक्त महानुभाव !

आज यह परिचय पुस्तिका आपके कर-कमलों में प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा हैं । यह क्षेत्र पूर्व में कैसा था यह जिन्होंने देखा होगा उन्हें ही इसका ध्यान होगा, किन्तु क्षेत्रोन्नति में समस्त जैन समाज ने अपनी उदारता एवं दान-शीलता का परिचय दिया है । साथ ही हमारी प्रबंधकारिणी कमेटी ने भी अहर्निश कठिन परिश्रम किया है, यह सब प्रत्यक्ष है।

पुरातत्व के अन्वेषक विद्वान श्री नीरज जैन ने क्षेत्र का यह विस्तृत परिचय तथा भावपूर्ण पूजन लिख कर एवं क्षेत्र के अनेक चित्र प्रस्तुत करके प्रबंधकारिणी को जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उनका आभारी हूं ।

मैं प्रबंधकारिणी समिति की ओर से मैनवार के उदार-मना श्रीमान् सिंघई परिवार का भी आभार मानता हूं जिन्होंने यह परिचय पुस्तिका प्रकाशित करा कर वितरित कराने की कृपा की है।

आशा है कि समस्त जैन समाज व प्रबंधकारिणी समिति हमें ऐसा योग देती रहेगी, और यथाशीघ्र यह क्षेत्र उन्नति एवं प्रकाश में आ जायेगा । पुनः आपसे प्रार्थना है कि क्षेत्र की पूर्वा-पर स्थिति की जानकारी हेतु पुस्तिका का आद्योपान्त अवश्य ही पढ़ने का कष्ट करें।

पं. गुलाबचन्द्र जैन 'पुष्प'
टीकमगढ़ (म.प्र.)

श्री १००८ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
नवागढ़

परिचय

धर्म के साधन में धर्मायतनों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। सातिशय, मनोज्ञ और सौम्य जिनबिम्बों का दर्शन, भव्य जीवों को संसार पारावार से उतारने में सहायक होता है। भारत के जिन भागों में जैन धर्म और जिनशासन का विशेष प्रभाव बहुत समय तक रहा है, उनमें बुन्देलखण्ड का स्थान महत्वपूर्ण है। यहाँ थूबोन, चन्देरी, दुधई, सीरोन, द्रोणगिरी, देवगढ़, अहार, पपौरा, बानपुर, नवागढ़, महोबा, खजुराहो, अजयगढ़, सीरा-पहाड़ आदि में जैन पुरातत्व का शानदार प्रतिनिधित्व करने वाले एक से एक बढ़कर शिल्पावशेष उपलब्ध हैं । इनमें से अनेक स्थान बहुत समय से प्रसिद्धि पाकर विख्यात तीर्थस्थान की श्रेणी में आ गये हैं, परन्तु कुछेक को प्रकाश में आये अभी थोड़ा ही समय हुआ है और उनका यथेष्ट प्रचार न हो पाने के कारण जनसाधारण में उनकी ख्याति नहीं है ।

अतिशय क्षेत्र नवागढ़ एक ऐसा ही रमणीक और पावन तीर्थ है जिसकी ख्याति का प्रयास किया जाना आवश्यक है।
ताकि इस सुन्दर और पावन क्षेत्र की वन्दना करके कर्म -कल्मष हरने का सुअवसर अधिक से अधिक लोग प्राप्त कर सकें ।

इस ओर की तीर्थ-यात्रा करने वाले अधिकांश यात्री आवश्यक जानकारी के अभाव में इस क्षेत्र के निकट आकर भी इसकी वन्दना से

बंचित रह जाते हैं । विशेषकर अहार जी, पपौरा जी, बानपुर तक आने वाले यात्रियों को तो नवागढ़ बहुत ही समीप और सुगम यात्रा का स्थान रह जाता है। इस स्थान की बन्दना करने पर मैनें यह अनुभव किया है कि इसका अधिकाधिक प्रचार किया जाना अत्यावश्यक है ।

इस स्थान पर और यहा आस पास, विशेष कर ऊमरी ग्राम में पुरातत्व की सामग्री यत्र-तत्र सर्वत्र बिखरी पड़ी है, जिसपर परिचयात्मक ढंग से कुछ लिखना किसी विशिष्ट विद्वान के ही बस की बात है, पर जब तक इस स्थान का ऐसा विस्तृत परिचय प्रस्तुत नहीं किया गया है तब तक साधारण जानकारी के लिए मैं अपनी धारणा के अनुकूल इस क्षेत्र का संक्षिप्त परिचित दे रहा हू ।

नवागढ़, उत्तर प्रदेश के झांसी जिले की महरौनी तहसील में सोजना नामक ग्राम से तीन कि.मी. की दूरी पर स्थित है। महरौनी से सोजना तक प्रति दिन बसे आती रहती हैं जहा से गाड़ियों का प्रबन्ध सहज ही हो जाता है।

उधर मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में, टीकमगढ़ से ककरवाहा तक प्रति दिन मोटर आती है। ककरवाहा से भी नवागढ़ सहूलियत से जाया जा सकता है। गाड़ियां मिल जाती हैं ।

यह नावई नाम का एक छोटा सा ग्राम है। इसी को नवागढ़ भी कहते है। ग्राम एक सुन्दर नाले के द्वारा तीन ओर से घिरा हुआ है जिसमें सदैव निर्मल जल रहता हैं।

ग्राम के दक्षिण-पूर्वी कोने पर एक बड़ा टीला पड़ा है जिस पर किसी समय विशाल जैन मन्दिर रहा होगा । वर्तमान में तो वहा केवल एक भोंहरा (जमीन के नीचे मन्दिर) है और ऊपर एक नवीन मन्दिर धर्मशाला तथा संग्रहालय है, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण और कतिपय दुर्लभ कलाविशेष संगृहित हैं।

यह टीला चबूतरा नुमा है और उसके चारों ओर -विशेष कर उत्तर की ओर-लगे हुए विशाल चौरस शिलाखण्ड किसी मन्दिर के

खण्डर होने का आभास देते है।

चबूतरे के बीचों बीच केवल एक मनुष्य के उतरने योग्य (लगभग दो फुट) द्वार से नीचे उतरने की सीढ़ियां है। जहां आठ फुट लम्बा चौड़ा और 6 फुट ऊँचा भोंहरा है। उसकी छत का पटाव दो पत्थरों से किया गया है जिनमें एक विशाल कमल की आकृति बनाई गई है । द्वार के ऊपरी तोरण में तीर्थ कर प्रतिभा तथा दोनों पार्श्व में कलशवाहिनी यक्षी प्रतिमायें है परन्तु ये तीनों पत्थर उल्टे लगे हुए हैं ।

भोहरे में उत्तरमुख, कायोत्सर्ग आसन, मत्स्य चिन्हांकित, भगवान अरहनाथ की मनोज्ञ नासाग्र दृष्टियुक्त साढ़े पांच फुट ऊँची प्रतिभा अवस्थित है। मा

नीले पाषाण की सुन्दर ओपदार पालिश की हुई यह प्रतिमा सम्वत् **1202** विक्रमाब्द में प्रतिष्ठित की गई थी।

शांतिनाथ और कुंथुनाथ की दो अन्य प्रतिमायें जो यहां रही होगीं, उनमें से शांतिनाथ की प्रतिमा का केबल सिंहासन वाला हिस्सा प्राप्त हुआ है तथा संग्रहालय में सुरक्षित है। इस अवशेष पर सम्वत् सहित शिलालेख भी हैं ।

प्रतिमा के हाथ की हथेलियाँ कमलाकार बनाई गई है और अंगुलियों में वही वैचित्र्य है ~~जो सं० **1201** की मदनपुर की मूर्तियों में पाया गया है~~। शरीर सौष्ठव, अनुपात एवं ग्रीवा तथा मस्तक की रचना सुन्दर बन पड़ी है। गुच्छकें के माध्यम से चित्रित केशावलि में दोनों और पड़ी हुई गुलके और भोंहो के कमान इस मूर्ति की अपनी विशेषता है। वक्ष भाग पर श्रीवत्स भी दर्शनीय है।

सिंहासन के पार्श्व में शासन देवियां तथा इन्द्र अंकित किये गयें है। ऊपर भामण्डल अति सादा तथा ऊपर से खंडित है। यह प्रतिमा किसी आपत्ति काल में केवल सुरक्षा की दृष्टि से इस भोंहरे में रख दी गई ज्ञात होती है।

संग्रहालय-

वैसे तो यह पूरा चबूतरा ही एक विशाल भू-गर्भित संग्रहालय कहा जाना चाहिये । क्योकि यहां महत्वपूर्ण सामग्री दबी हुई पड़ी होने के अनेक प्रमाण और महती सम्भावनायें दिखाई देती है, परन्तु उनका उद्घाटन श्रम और धन द्वारा ही साध्य होगा यहां आसपास से उठा कर जो शिलाखण्ड एकत्र किये गयें है उनमें कई विशेष महत्वपूर्ण है, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैं।

तोरण-

कला- शिल्प की अपेक्षा से सम्भवतः इस तोरण का स्थान न केवल यहां के संग्रहालय में प्रथम होगा वरन दो चार अच्छे संग्रहालयों में भी सुन्दरता, वीतरागता और लालित्य का एक साथ इतना सुन्दर प्रतिनिधित्व करने वाले पाषाण दुर्लभ ही होगें वह किसी विशाल देवी पर मूल - नायक की मूर्ति के ऊपर लगे हुये तोरण का भाग है जिसपर भगवान को कमल अर्पित करते हुये दो मस्त और सुसज्जित गजराज अंकित किये गये है । गजारूढ़ देव और देवांगनायें अपने हाथों में कलश और पुष्पमाल लेकर पूजार्थ जाते हुये चित्रित किये गये है । हाथियों के पीछे अति सुन्दर अलंकारों के बीच दोनो ओर पांच-पांच तीर्थकरों का अंकन हैं। तोरण का अंत ऊपर की ओर शिखर की तरह शिला-खण्डों का अंकन करके चक्र, आमलक और कलश के द्वारा बडे लुभावने ढंग से किया गया है। नागर शैली के मन्दिर शिखर के सभी अवयव इसमें दर्शाये गये हैं।

युगादि देव-

यह लगभग सात फुट ऊँची कायोत्सर्ग प्रतिमा मेरे अनुमान से इस स्थान की प्राचीनतम मूर्ति है। इस मूर्ति का शरीर विन्यास, इन्द्रादिक के खड़े होने का ढंग उनका पहिनावा और तीर्थकर के कांधे पर अंकित की गई जटायें उसे पूर्व मध्यकाल की कृति घोषित करती है।

लगभग इसी काल की एक और सुन्दर मूर्ति तीर्थकर पारसनाथ की 3 फुट ऊँची पदासन प्रतिमा हैं। पीठिका के ऊपर बांई ओर नाग की पूँछ

का अंकन करके नाग की कुण्डली प्रारम्भ की गई है जिससे आसन की रचना हुई है, और इन्ही कुण्डलियों द्वारा सुन्दर पृष्ठभाग बनाता हुआ यह नाग अपनी दर्शनीय फणावलि से मूर्ति को आवेष्ठित कर रहा था जो खंडित है।

यद्यपि शिला लेखांकित प्रतिमा यहां सं० **1202** विक्रमाब्द से पूर्व की नहीं है परन्तु उपरोक्त तोरण, वेदिका, युगादि देव, पारसनाथ तथा एकाधिक अन्य कलाविशेषों से सिद्ध होता है कि यहां नवमी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी की निर्माण की हुई और भी सामग्री प्राप्त होनी चाहिए

मानस्तम्भ-

नवागढ़ के पास ही सोजना ग्राम की वाटिका में इस क्षेत्र के चार मानस्तम्भ लगे हुऐ है जिनमें तीर्थंकर प्रतिमायें है तथा ''सं० **1202** गोलापूर्वान्वये'' शब्द स्पष्ट अंकित हैं ।

विनाश का ताण्डव-

इसी क्षेत्र में **7** फुट ऊँची पारसनाथ की एक फणावलि सहित पद्मासन प्रतिमा है जो समीप ही ऊमरी ग्राम से लाई गई थी । उक्त ग्राम में जाने पर मुझे अन्य बहुतसी उल्लेखनीय सामग्री प्राप्त हुई है जिसकी चर्चा यथास्थान करूंगां। यहां एक ही घटना का उल्लेख करके उसका विवरण दे रहा हूं जिससे इस बात का अन्दाजा लगा लिया जा सके कि आज भी पुरातत्व के महत्व की सामग्री का विघटन और विनाश किस निर्दयता, उपेक्षा और बेदर्दी से हो रहा है।

ऊमरी ग्राम की गलियों का सर्वेक्षण करते समय एक चर्मकार के आंगन में एक चौरस पत्थर गड़ा हुआ दिखाई दिया जिसमें नीचे की ओर एक फूल की पंखुरी मेरे साथी श्री पन्नालाल की दृष्टि में आई । चर्मकार इस पत्थर पर अपनी रापी सुतारी पर धार लगाने का काम किया करता था । इसे उखाड़ कर देखने पर तो हम लोग धन्य हो गए ।

यह पाषाणखण्ड और कुछ नहीं, एक विशाल तीर्थंकर प्रतिमा के

शीर्षभाग का छत्र था जिसमें कुम्भ, अभिषेक करते हुए गज द्वय ओर ढोलकी लिए हुए उद्घोषक अंकित हैं । उद्घोषक के ऊपर सुन्दर तोरण के बीच एक अन्य तीर्थकर प्रतिमा दिखांई दे रही हैं यह आकर्षक शिलाखण्ड चर्मकार बन्धु के आंगन से उठाकर ऊमरी के जैन मन्दिर में मैनें रखवा दिया था पर यह अकेला तो नही था न ? इधर के दो ग्रामों का शायद ही कोई ऐसा अभागा घर हो जिसमें एकाध अच्छा कलाविशेष कहीं न लगा हो । चबूतरे पर, दीवार में, स्नानगृह में या नाली में कहां क्या मिल जाय इसका कोई ठिकाना यहां नही है । भवानी की मढ़िया में स्थित जैन मूर्ति तो दर्शनीय है ।

वास्तव में आवश्यकता तो इस बात की है कि इस पूरे क्षेत्र का सर्वेक्षण करके कम से कम जैन पुरातत्व का जो भी अवशेष जहां भी उपलब्ध हो, हमें उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध अति शीघ्र कर देना चाहिए । इससे जहां उसकी अविनय बचेगी वही हम उसे आगामी दीर्घ काल के लिए विनाश से भी बचा ले जायेगें । यही शिलाखण्ड हमारें पूर्वजों की सम्पन्नता, उदारता, धर्मनिष्ठता और कला-प्रियता के ज्वलन्त उदाहरण हैं। इनकी सुरक्षा करना हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है और धार्मिक कर्तव्य भी है । इस प्रकार के मन्दिरों, शिल्पावशेषों, मूर्तियों आदि का उद्धार, सुरक्षा जीर्णोद्धार तथा प्रचार करना, नये मन्दिरों के निर्माण तथा नई मूर्तियों की प्रतिष्ठा और गजरथ महोत्सव आदि आयोजनों से कहीं आधिक आवश्यक और पुण्यदायक है।

विकास का इतिहास-

यद्यपि इस क्षेत्र के जीर्णोद्धारं, विकास, निर्माण और प्रचार के लिए बहुत कुछ करना बाकी है, पर फिर भी प्रबन्धकारिणी समिति के उत्साही सदस्यों, असफेर के धर्मनिष्ठ श्रावकों और वर्तमान पदाधिकारियों द्वारा गत तीन चार वर्ष के थोड़े से समय में जितना जो कुछ भी किया जा सका है वह सराहनीय है। आज क्षेत्र की बन्दना करके इसकी पूर्व स्थिति की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

आज से पांच वर्ष पूर्व तक इस भोंहरे के ऊपर पूरे चबूतरे को ढके हुऐ इमली का एक विशाल पुराना पेड़ खड़ा हुआ था । उस पेड की सैकड़ों घनी डालों ने इस निर्जन स्थान को भयावह बना रखा था और पेड़ के आश्रित निवास करने वाले सर्प, गुहेरे आदि जन्तुओं के कारण तथा भोहरे में भरे कचरे के कारण प्रतिमा का दर्शन करना भी बड़ा श्रमसाध्य और साहस का काम था।

इस इमली के बृक्ष को काटना, उसकी विशालता के कारण सचमुच एक समस्या थी बृक्ष में अनेक देवी देवताओं के निवास की कल्पना और कीड़े मकोड़ों की अधिकता के कारण भी भोले-भाले मजदूर अनागत के अनजाने भय से आकान्त हो जाते और पेड़ काटने में अपनी असमर्थता प्रकट कर देते थे । एक बार कुछ साहसी युवक कामगारों ने अस्सी रूपये पारिश्रमिक पर इस बृक्ष को निर्मूल करने का ठेका लिया भी पर परम्परागत अंधविश्वासों की आंधी में उनका साहस अधिक न ठहर सका । अन्त में कुछ उत्साही कार्यकर्त्ताओ की प्रेरणा पर आस पास के जैन युवकों ने ही इस कार्य के लिए कमर कसी और अपनी लगन तथा परिश्रम के द्वारा क्षेत्र के विकास की वह सबसे बड़ी बाधा जड़ से उखाड़ फेकने में सफलता प्राप्त की।

मेरा ऐसा अनुमान है कि यहां लगभग 80 फुट चौड़ा और 125 फुट लम्बा जो चबूतरा वर्तमान है वह किसी समय एक विशाल जिन मंदिर रहा होगा भोहरे में भगवान अरहनाथ की प्रतिमा जिस अनियोजित ढंग से अस्त व्यस्त सी रखी पाई गई है उससे यह अनुमानित होता है कि उस क्षेत्र का वास्तविक और विशाल समवशरण यहीं कहीं अन्यत्र भूगर्भित है और उसकी ओर से दृष्टि हटाने के लिए तथा किसी विशेष संकट काल में पूजन दर्शन मात्र के लिए भगवान अरहनाथ की यह मूर्ति इतने संकीर्ण भोहरे में बहुत शीघ्रता में स्थापित की गई है । मुझे विश्वास है कि यदि उत्खनन किया जाय तो यहां हमारी कल्पना को भी चकित कर देने वाली अत्यन्त महत्व की सामग्री प्राप्त होने की सम्भावना है । इस ओर ध्यान देना कार्यकारिणी का कर्तव्य है

और उसमें सहयोग देना समाज का धर्म है।

संग्रहालय का महत्व-

जैसा कि मैं ऊपर परिचय में व्यक्त कर चुका हूं इस स्थान पर तथा यहां असफेर में मध्य युगीन पुरातत्व की तथा विशेष कर जैन पुरातत्व की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। कुछ अवशेष तो राष्ट्रीय महत्व के हैं । यहां से तीन मील पर स्थित ऊमरी का मठ एक सर्वांग सुन्दर सूर्य मंदिर है जिस पर कलाकार की कोमल कल्पनाओं के अनेक चित्र छेनी के माध्यम से पाषाण पर अमर हो गये है । खेद है कि इस मंदिर के पत्थर निकाल कर लोग मकान बनाने और गिट्टी तोड़ने के काम में ला रहे है । इस मंदिर पर मैंने एक स्वतंत्र लेख भी लिखा है। भारत सरकार के पुरातत्व विभाग से इसकी सुरक्षा के लिए भी मैंने निवेदन किया है और मेरे अनन्य मित्र, आर्क्यालॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया, खजुराहो के कंजेर्वेशन असिस्टेंट, श्री लक्ष्मीलाल शाह ने इसके चित्र देखकर और विवरण ज्ञात कर इस सूर्य मंदिर को राष्ट्रीय महत्व के कलावशेषों में सुरक्षित स्थल घोषित कराने का प्रयास करने का मुझे वचन भी दिया है।

इसी ऊमरी में कुछ समय पूर्व तक एक विशाल प्राचीन जैन मंदिर था जो भूमिसात् हो गया है। यही एक आठ फुट ऊँची भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा पाई गई थी जिसे कुयें की पाट पर शिला की तरह लोगो ने पाट रखा था प्रतिमा के नाक मुंह तथा फणावलि उसे हिलाते डुलाते थे अतः वे सब अवश्य मजदूरों द्वारा तोड़ दिये गये थे। बाद में उत्साही कार्य-कर्ताओं द्वारा यह मूर्ति नवागढ़ के संग्रहालय में रख दी गई है जो आज भी वहां की अति सुन्दर निधि है।

मैंनें स्वयं ऊमरी में पुरातत्व के अनेक महत्वपूर्ण अबशेष अपनी यात्रा में देखे हैं। एक चर्मकार बन्धु के आंगन से एक जैन कलाविशेष मैंनें उठावाया था जिसका विवरण ऊपर आ चुका है।

नवागढ़ से तीन मील दूर एक और स्थान सोजना है। यहां की बावड़ी में चार मानस्तम्भ लगे हुए हैं जिन पर जिनबिम्ब तथा शिलालेख मौजूद है। इन्हे वहां से निकाल लाने की स्वीकृति भी ग्राम पंचायत के धर्मात्मा पदाधिकारियों ने दे दी है, परन्तु धनाभाव के कारण काम अटका हुआ है।

यह समाज का कर्तव्य है कि पुरातत्व की कीमत समझे और उसे सुरक्षित तथा संकलित करने का अपना महान उत्तर दायित्व अनुभव करे तथा शक्ति भर दान देकर इन कामों को पूरा कराने में उत्साही कार्य कर्ताओं का हाथ बटावे । यह बड़े हर्ष की बात है कि श्रावक शिरोमणि दानवीर श्रीमान् साहु शांतिप्रसाद जी का लक्ष्य प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के उद्धार की ओर गया है देवगढ़, अहार, बानपुर आदि में उनकी ओर से महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। उनका ध्यान भी इस क्षेत्र की ओर दिलाने का प्रयास किया जाना चाहिए ।

अतिशय-

इस मनोज्ञ प्रतिमा के अभाव से जिस प्रकार यहां जंगल में मंगल हो रहा है वह अपने आप में एक अतिशय ही है पर इसके अतिरिक्त भी अनेक चमत्कारपूर्ण घटनायें यहां घटी हैं। जिनका विवरण क्षेत्र की प्रथम रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ हैं। इस स्थान की महत्ता के प्रभाव से अनेक भक्त गण असाध्य रोगों से छुटकारा पाने में सफल हुए है लाभान्वित होने वालों में जैनेतर भाई भी है और इस प्रकार निश्चित ही यह कहा जा सकता है कि पतित पावन भगवान के चरणोदक की त्रय ताप हरण करने वाली शीतलता ऊँच, नीच, अमीर-गरीब और ज्ञानी-मूर्ख का भेद किए बिना उन सबको यहां सहज ही प्राप्त है जिन्होंने मन वचन कार्य की पवित्रता पूर्वक अपने आप को अशरण बाशरण, अकारण बन्धु के चरणों में समर्पित कर दिया है।

आइये, एक बार इस परमनिधि के साक्षात दर्शन कीजिए और सोचिए कि इस परम पावन क्षेत्र के उद्धार और विकास में आप क्या सहयोग दे सकते हैं।

श्री नवागढ़ अरहनाथ जिन पूजा

स्थापना

हे अरनाथ अनाथ के नाथ,
सनाथ करहु भवपीर हरीजे
काढ़ि के या भव कानन तें अब,
मोक्ष निवास हमें प्रभु दीजे ।।
थापत हों कर जोड़ यहां,
करुणाकर कोर कृपा की करीज ।
दीनदयाल, दया निधि आय के
दास कौ या दुख दंद हरीजे ।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र नवागढ़ स्थित अरनाथ जिनेन्द्र ।
अत्र अवतर, अवतर, संवीष्ट अत्र तिष्ठ, ठः ठः।
अत्र मय सन्निहितो भव भव वष्ट् ।
परिपुष्पांजलि क्षिपामि।

अष्टक-

प्रासुक गंगाजल ल्याय, चरणन धार धरो ।
भव सागर अति दुखदाय, हे प्रभु पार करो ।
जय हे अरनाथ जिनेश नवागढ़ के स्वामी ।
मेटो भव भाव के क्लेश, प्रभु अंतर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशसत्य जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुम कुम केशर कपूर, मधुर सुगन्ध रचों ।
कीजे भव आतप दूर, चन्दन सों चरचों ।।जय०।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धर मन में परम उछाह, जे तन्दुल बीने ।
कर अक्षय पद की चाह, चरणन धर दीने ।।जय०।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनदेवाय अक्षतपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुन्दर सुरभि-निकेत, चम्पादिक लायो ।
मन्मथ-मद मर्दन हेतु, प्रभु तुम ढिंग आओ ।।जय।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनदेवाय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चुन चुन लायो तुम पास, घेवर अरू खाजा।
प्रभु कीजे क्षुधा विनाश त्रिभुवन के राजा ।।जय०।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय लघु कंचन दीप, जग मग न्याय धरो ।
हे अनुपम ज्ञान-प्रदीप, भ्रम तम वेगि हरो ।।जय०।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय मोहान्धरकारविनाशनाय दीपं
निर्वपामीति स्वाहा

मलयागरू अरू घनसार, चूरण करि खेऊँ।
प्रभु अष्ट कर्म कर क्षार, पंचम गति लेऊँ।।जय०।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं
निर्वपामीति स्वाहा

श्री फल कदलीफल आम, चुन लायो पल में ।
चाहत हों हे गुण धाम, मोक्ष महाफल में।।जय०।।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय मोक्षफलप्राप्ताय फलम्
निर्वपामीति स्वाहा ।

जल, चन्दन, अक्षत, फूल , नेवज, दीप धरो ।
दस गंध सुगंधि दुकूल, फल लै अर्घ करो ।।जय०।।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्
निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाल

श्री अरनाथ जिनेश के, चरण कमल सिर नाय।
अतिशय गुण जय मालिका, वरणत चित्त लगाय।।

(पद्धरि छन्द)

जय जय जिनवर जय जय जिनेन्द्र ।
पूजत चरणाम्बुज सुर महेन्द्र ।।
जय राय सुदर्शन सुत महान् ।
जय मित्रा नन्दन सुमति थान ।।
जय जग जीवन के हरत क्लेश ।
जय नाथ नवागढ़ के जिनेश ।।
जो जन तुव पूजन करत नित्त ।
भवसिंधु लांघ शिव पाय सत्य ।।
गणधर न सके तुव अन्त पाय ।
मैं अल्पबुद्धि किम सकत गाय ।।
तुव चरणोदक जो शीश लाय ।
भव रोग एक छिन में नशाय ।।
यदि तुच्छ रोग छूटें जिनेश ।
आश्चर्य कौन इसमें विशेष ।।

जो अनुरागे तव पूजनादि ।
निरबरै मोह मदिरा अनादि ।।
आश्चर्य कौन तव भक्त लोग ।
मेटें पागलपन आदि रोग ।।
मैं पूजत तुव चरणारविन्द ।
मुझको विजयी कीजे जिनेन्द्र ।।
मेरे बैरी मद, मोह, मान ।
इनसे बच पाऊँ अचल थान ।।
भव सागर तारण तरण देव ।
जय मोह महा-तम हरण एव ।।
जब लौं न तरों भवसिंधु नाथ ।
भव भव पाऊँ तुव चरण साथ ।।

(धत्तानंद छंद)

अरनाथ जिनेशं, हर भव क्लेशं,
तुमहिं सुरेशं ध्यावत है ।
जे बन्दन आवें भक्ति बढ़ावें,
नीरज ते फल पावत हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री नवागढ़स्थ अरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।